तेवरीपक्ष

तेवरी-विधा को समर्पित प्रस्तुति

वर्ष-36, अंक-2, अक्टू.-दि.-2019, मूल्य-15 रु., वार्षिक- 50 रु.

दर्शन बेज़ार के सद्यः प्रकाशित तेवरी-संग्रह

'खतरे की भी आहट सुन'

की तृतीय प्रस्तुति

संस्थापक-

लोककवि रामचरन गुप्त

परामर्श-

डॉ. गोपाल बाबू शर्मा

दर्शन बेज़ार

संपादक- रमेशराज

Scanned with CamScanner

ग़ज़ल एक प्रणय गीत

ग़ज़ल का अतीत एक प्रणय-गीत, महबूबा से प्रेमपूर्ण बातचीत' के रूप में अपनी उपस्थित दर्ज कराते हुए साहित्य-संसार में सबके सम्मुख आया। ज्यादा भटकने की जरूरत नहीं है, 'मद्दाह' का शब्दकोष देख लीजिए, उ.प्र. हिन्दी संस्थान की प्रामाणिक शब्दकोषीय पुस्तक टटोल लीजिए, या 'नालंदा अद्यतन शब्दकोष' का अवलोकन कीजिए, इन सबके भीतर ग़ज़ल शब्द का अर्थ प्रेमिका से प्रेमपूर्ण बातचीत' ही इसके अतीत का साक्षी बनकर खड़ा है। वह चीख-चीख कर कह रहा है कि ग़ज़ल की खमदार जुल्फें हैं, आँखों में काजल से कँटीलापन है, अधरों पर प्रेमी से मिलने का आलाप है। हाथों पर मेंहदी का रचाव है, पाँवों में प्रेमी को रिझाने के लिये महावर से रचाव है। हिरनी जैसी चाल है। मस्ती है, धमाल है। ग़ज़ल प्रेमी के लिये या तो प्रेमिका से मिलने का आमंत्रण है या निरंतर मिलते रहने का प्रण है। ग़ज़ल का रूहानी रूप भी आशिक और मासूक का मायाजाल है। ग़ज़ल रति और कामदेव-के मिलन की प्रेमकथा है। ग़ज़ल का हर रूप-स्वरूप सिर्फ और सिर्फ 'प्रणय निवेदन' में रचा-बसा है।

ग़ज़ल एक निश्चित शिल्प (शे'र, रदीफ, काफियों, मतला और मक्ता के साथ-साथ बहरे) में अपनी नाजुक-बयानी के लिये जानी और मानी जाती है। लेकिन आज के कथित ग़ज़लकार को इसके इस रूप को प्रयोग में लाते हुए भी इसी रूप पर शर्म भी आती है। वह ग़ज़ल के इस प्रेम-रूप को मारना चाहता है। मतला, मक्ता से मुक्ति के साथ-साथ इसकी बहरों के पेट में चाकू उतारना चाहता है। इसकी आत्मा 'प्रणयात्मकता' के सीत्कार को आम आदमी के चीत्कार में बदलकर इसमें जनवादी चरित्र फिट कर हिट होना चाहता है। हिट होने की यह गिटपिट भले ही ग़ज़ल के शास्त्रीय पक्ष के अनुकूल न हो, लेकिन वह इस तरीके से सामाजिक सरोकारों के फूल खिलाना चाहता है। वह अपनी एक ही ग़ज़ल कुछ शे'रों में थिरकती चितवन के वाण छोडता है, प्रेमिका से आलिंगनबद्ध होता है, रति और कामदेव की तस्वीर खींचता है तो उसी ग़ज़ल के अन्य शे'रों को जनपीड़ा से जोड़कर, महान हो जाना चाहता है। ग़ज़ल के भीतर का सीत्कार जब चीत्कार का भी आभास देने लगता है तो ग़ज़लकार के ग़ज़ल कहने या लिखने, पर एक उपहास, अट्टहास की मुद्रा में खड़ा हो जाता है। और फिर सवाल उठाता है कि क्या 'प्रेमिका को बाँहों में भरने का जोश' और 'कुव्यवस्था से पनपा आक्रोश एक ही सिक्के के दो पहलू हैं? क्या चुम्बन और क्रन्दन का अर्थ एक ही होता है?

'सीत्कार' और चीत्कार, 'प्रेमिका को बाँहों में भरने के जोश' और कुव्यवस्था से पनपे सामाजिक आक्रोश तथा चुम्बन और क्रन्दन का क्या एक ही अर्थ होता है? दुर्भाग्य यह है कि आज का मानसिक रूप से बीमार ग़ज़लकार इन चीजों में भेद करने को तैयार नहीं है। अशुद्ध मतलों या लुप्त रदीफ-काफियों से युक्त कथित ग़ज़ल के प्रति उसका विश्वास यह है कि वह श्रेष्ठ ग़ज़ल कह रहा है, उसके इस श्रेष्ठ कर्म को माना ही नहीं, सराहा भी जाये। ऐसे ग़ज़लकार

Scanned with CamScanner

ग़ज़ल की बहर के विधान को जानते ही नहीं हैं, इसलिये उसमें हिन्दी छन्दों को घुसेड़ रहे हैं। हिन्दी में हिन्दी-छन्दों की मात्राएँ गिराकर, सुकर्म नहीं कुकर्म करने में जुटे हैं। ग़ज़ल का हर शे'र पूर्ण होता है ठीक 'दोहे' की तरह। किन्तु इस व्यवस्था को तोड़कर ग़ज़ल को गीत जैसा रूप देकर वह मगन है। ग़ज़ल अपने इस आत्मरूप और विकृत शिल्प पर आँसू बहा रही है। लेकिन ग़ज़लकारों को अपने इस कुकर्म पर जरा भी शर्म नहीं आ रही है।

ग़ज़ल के इन कथित महान रचनाकारों, परम विद्वानों, अति ज्ञानियों को ग़ज़ल के प्रति किये गये कुकर्म को लेकर आशंका न हो, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता। ये विद्वान अनेक शंकाओं से भी घिरे हैं। तभी तो इस विकृत रूप को नये-नये नाम देने की कोशिश में लम्बे समय से जुटे हैं। कोई इन्हें 'गजलिका' कहता है तो कोई ' अग़ज़ल', कोई इसे 'गीतिका' नाम देना चाहता है तो कोई 'मुक्तिका'। कोई इसे 'बाल ग़ज़ल' पुकार रहा है तो कोई 'दोहा ग़ज़ल'। कोई 'हिन्दी ग़ज़ल' के रूप में इसकी स्थापना करना चाहता है तो कोई ग़ज़ल के नीचे के नुक्ते हटाकर इसे 'नुक्ताविहीन गजल' के रूप में हिन्दी की अमूल्य विरासत बना रहा है। कुल मिलाकर ग़ज़ल के नियमों-उपनियमों, शास्त्रीय पक्षों को पछाड़कर, ग़ज़ल को जड़ों से उखाड़कर ऐसे कथित ग़ज़लकार ग़ज़ल पर विशेषांक-दर-विशेषांक निकाल रहे हैं, अपने ग़ज़ल संग्रहों की ऐसी भूमिकाएँ स्वयं लिख रहे हैं या अन्य ग़ज़ल-भक्तों से लिखवा रहे हैं और ग़ज़ल के सुधी पाठकों को समझा रहे हैं कि ग़ज़ल अब ग़ज़ल की नकल नहीं रही। इसकी नयी शकल हम गढ़ रहे हैं, ग़ज़ल के क्षेत्र में आगे बढ़ रहे है और एक दिन इसी बदले रूप को स्थापित करके मानेंगे।

आज की ग़ज़ल यदि ग़ज़लपन की सारी शर्तों को पूरा कर रही होती तो उसे 'ग़ज़लिका', 'अगजल' गीतिका, मुक्तिका, दोहा ग़ज़ल, बाल ग़ज़ल, व्यंग़ज़ल, आजाद ग़ज़ल, अवामी ग़ज़ल, 'नुक्ताविहीन गजल' आदि-आदि नये नाम देने की आवश्यकता न पड़ती। 'गीतिका' एक चर्चित छंद है, फिर ये 'गीतिका' क्या है? मुक्तिका किस चीज से मुक्त होना चाहती है? अगजल जब ग़ज़ल है ही नहीं तो इस नाम का औचित्य क्या? आज यदि बह्र की हत्या कर 'दोहा ग़ज़ल' आयी है तो क्या 'दोहा ग़ज़ल' के समान छन्द के आधार पर गीतिका, हरिगीतिका, चौपाई, सोरठा आदि ग़ज़ल के रूप सामने आने चाहिए या आयेंगे? आज यदि 'बाल ग़ज़ल' लिखी गयी है तो क्या भविष्य में उम्र को ध्यान में रखकर किशोर, किशोरी, युवक-युवती, प्रौढ़ा, वृद्ध-वृद्धा ग़ज़ल भी लिखी जायेंगी? ठीक यही स्थिति अवामी ग़ज़ल, आजाद ग़ज़ल की है? अवामी ग़जल नाम यदि सही है, तो नेता ग़ज़ल, अफसर ग़ज़ल, उद्योगपति ग़ज़ल, सेठ-ग़ज़ल की शकल थी देखने को मिलेगी? आज ग़ज़ल में यदि ग़ज़ल के नियम उपनियम आजाद हैं तो इस कथित आजादी में क्या इसके शास्त्रीय स्वरूप की हत्या नहीं?

ग़ज़ल के शास्त्रीय आधार की हत्या करने वाले ऐसे ग़ज़लकार इन मूलभूत प्रश्नों के उत्तर देने में तो अपने हलक को सूखा कर लेते हैं, किन्तु सवाल जब हिन्दी साहित्य की नूतन विधा तेवरी का आता है तो ग़ज़ल के यही कथित पक्षधर, दम्भी-अहंकारी विद्वान तेवरी के प्रति मुखर ही नहीं होते, प्रहार और वार की मुद्रा में आ जाते है और चीखते-चिल्लाते हैं कि-" तेवरी को गजल के शिल्प

Scanned with CamScanner

में क्यों लिख रहे हो। तेवरी अपरिपक्व मस्तिष्कों की उपज है, खालिस्तान बनाने की माँग है। ग़ज़ल का अधकचरा अनुकरण है। आज यदि तेवरी आयी है तो कल इसका पीछा घेवरी और पेवरी भी करेंगी।'' आदि-आदि।

तेवरी के शिल्प पर ग़ज़ल की नकल के आरोप ऐसे ग़ज़ल के अतिज्ञानी थोप रहे हैं, जो यह नहीं जानते कि जब किसी रचना का कथ्य बदलता है तो उसी के साथ शिल्प भी परिवर्तित हो जाता है। शिल्प भी उसी राग को गाता है, जो कथ्य को सुहाता है। देखा जाये तो कथ्य और शिल्प में अधूरे प्रकार से नहीं, पूरी तरह समानुपाती नाता है। शिल्प काव्य का वह साधन है जिसके माध्यम से विचार के द्वारा बने भाव, अनुभाव के रूप में प्रकट होते हैं। काव्य में अन्तर्निहित विचार जिस प्रकार का है, वह उसी प्रकार की ऊर्जा प्रदान करता है। यह ऊर्जा भाषा के उसी रूप को ग्रहण करती है, जिसके माध्यम से पाठकों, दर्शकों तक सहज, सरल और सार्थक तरीके से सम्प्रेषित हो सके। मसलन-यदि किसी कविता में रौद्ररस को प्रकट किया गया है तो उस रस की शब्दावली में वही शब्द आयेंगे या आते हैं, जिनमें तल्खी, ललकार, मार, फटकार, भर्त्सना, वार, संहार, प्रतिकार, दुत्कार, गर्जना आदि हो। यदि कविता शृंगार रस की होगी तो उसकी शब्दावली रौद्ररस के शब्दों के ठीक विपरीत ऐसे शब्दों को चयनित करेगी जिनमें प्यार, अभिसार, चुम्बन, आलिंगन, सीत्कार, मिलन आदि का स्पर्श हो।

ऐसा कदापि नहीं होगा कि कविता रौद्ररस की हो और उसकी शब्दावली में पायल की खनक, मैंहदी और महावर का रचाव, मिलन का चाव शाब्दिक स्थान पा सके। इसका सीधा अर्थ यह है कि तरह-तरह के विचारों से उत्पन्न भाव भी तरह-तरह के होते हैं और इन भावों के बदल जाने पर उनसे उत्पन्न अनुभावों को जिस माध्यम से प्रकट किया जाता है, भाव बदलने पर वह माध्यम भी बदल जाता है। इस बात को हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि विचार और भाव अर्थात् काव्य का आत्मरूप कथ्य यदि परिवर्तित होता है तो काव्य के शिल्प का एक पक्ष यदि रस बदलता है तो दूसरा पक्ष उसकी भाषा शैली भी खुद-ब-खुद बदल जाती है।

लेकिन ग़ज़ल फोबिया के शिकार हमारे माननीय ग़ज़लकार हैं कि वे ग़ज़ल के आत्मरूप (विचार और भाव) जिसमें शृंगार रस का ही समावेश होना चाहिए, उसे बदलकर उसमें व्यवस्थाा के प्रतिकार, पीड़ित की चीत्कार, सामाजिक सरोकार, आम आदमी के अभाव-घाव, नैतिक पतन, यहां तक कि कथित जनवादी चिन्तन को उसमें ठूँस रहे हैं। ग़ज़ल की प्रणयात्मक भाषा शैली को बदलकर उसे व्यवस्था के सताये लोगों की क्रन्दन शैली बना रहे हैं। इस सुकृत्य से ग़ज़ल के कथ्य में जो बदलाव आया है, जो विरोध रस का स्वर मुखरित हुआ है, उसे न तो पहचान पा रहे हैं, और न इस कथ्य और शिल्प के बदलाव को नया सार्थक नाम देने का प्रयास कर रहे हैं।

रमेशराज

Scanned with CamScanner

'ऊधौ कहियो जाय' एक अनूठी काव्यकृति

● योगेन्द्र शर्मा

कविवर निराला का कथन है-कविता बहुजीवन की छवि है। तेवरी भी माँ सीता की तरह, भूमि से ही जन्मी है, और रमेशराज, राजर्षि जनक की भूमिका में हैं। तेवरीकार, रमेशराज की कविता मूलतः आमआदमी की पीड़ा, असंतोष, क्षोभ व आक्रोश की कविता है।

समीक्ष्य पुस्तक में, कवि ने नन्दलाल-श्री कृष्ण को शासक, व गोपियों को जनता जनार्दन के प्रतीक के रूप में लिया है। उनकी कविता का रंग, व्यवस्था-विरोध का है। दो तेवर दर्शनीय हैः-

हम तो उनके सामने, हुए बहुत बलहीन
सब की बाँह मरोड़ कर खुश तो हैं नन्दलाल? बताओं कुछ तो ऊधो?
जित घायल हर भाव हैं, घाव भरा हर चाव
नीबू वहाँ निचोड़ कर खुश तो हैं नन्दलाल? बताओं कुछ तो ऊधो?

इस उपभोक्तावाद व भूमण्डलीकरण के युग में निर्धन और धनहीन व धनवान और अधिक धनवान हो गया है। कवि अपनी लेखनी के माध्यम से हृदयस्पर्शी बेवाक चित्र प्रस्तुत करता है-

रोजगार नित खोजते, नन्हे-नन्हे हाथ
अब न पकड़ते तितलियाँ गोकुल रहे उदास। बसी हर मन में पीड़ा।
फटी रजाई, कम रूई, हुई खाट बेकार
जाड़े में मेहमान की रही समस्या रोज। समस्या हल कर दीजे।

यूँ तो कागजों पर सरकार ने कई जनकल्याण की योजनाएं बनायी हैं, 'अच्छ दिनों' की अगवानी में। परन्तु लाल-फीताशाही व भ्रष्टाचार के कारण, आम जनता उनके लाभ से महरूम रह जाती है। तेवरीकार के व्यंग्य की धार दर्शनीय है-

सरकारी अफसर कहै, इस सरका री नोट
ऊधो सारा देश है, रिश्वत ला की ओर। श्याम का अजब सुशासन।
डकैतियाँ तो पड़ गयी, पहुँच न पायी चौथ
इस पर थानेदार ने डाकू डाँटे रोज। मरें हम कब तक ऊधो?

रमेशराज की कविता का स्टैक्सचर (तानाबाना) सामान्यतया व्यंग्य है। व्यंग्य भी ऐसा कि जिस पर वार किया हो, वह तिलमिला जाये। तेवरी दर्शनीय हैः-

अब फिर आये हो यहाँ पाँच साल के बाद
तुम वोटों की अर्चना,ऊधो जानो खूब। बड़े छलिया हो ऊधो।
कुर्सी की उनकी चढ़ी, ऊधो ऐसी भाँग
मदमाते से डोलते, अब वे श्याम न श्याम। वोट हम क्यों दे उनको?

तेवरीकार की तेवरी, जनाक्रोश की संवाहक, दोधारी तलवार प्रतीत होती है-

Scanned with CamScanner

ढाई आखर की डगर आज भूल कर श्याम
सच के व्याख्याता बने, वेदों के विद्वान। प्रेम में बसी सियासत।
जनपथ के रिसते हुए, छुए न कोई घाव
राजपथों से कब, उठे, भले दया के बोल? तल्खियाँ इसीलिये हैं?

गरीब की बेटी के पक्षधर, रमेशराज की तल्खियों केवल राजनैतिक गलियारों से ही नहीं, समकालीन व्यवस्था क प्रति भी हैं-

यूँ तो हुई जवान, निर्धन के घर जनम ले
रही कुँआरी ही खुशी, पीले हुए न हाथ, दुखों ने ऐसे घेरा।

तेवरीकार, प्रतीकों के माध्यम से आज के रहनुमाओं पर व्यंग्य-प्रहार करता चलता है-

फूलों से मकरन्द गुम, गायब रंग सुगन्ध
पात-पात पर व्यंग्य-सा मनमोहन का प्यार। मुबारक उनको गद्दी।

तेवरी, अपने शैशव काल में प्राय: कथित ग़ज़ल के शिल्प पर लिखी गयी थी। यद्यपि, तेवरीकार ग़ज़ल की रवायतों को समय-समय पर तोड़ते रहे थे। यथा, तेवरी में अन्तिम शेर, अर्थात मक्ता शेर न कहना। यथा, ग़ज़ल की प्रचलित बहरों से बाहर निकलना। परन्तु तेवरी आन्दोलन के प्रवर्तक रमेशराज ने अन्य छन्दों, यथा, वर्णिक आदि, अन्य छन्दों में भी तेवरी की रचना की, जो अपेक्षाकृत कठिन कार्य था।

शिल्पगत प्रयोगों की कड़ी में रमेश भाई ने, आनुप्रासिक तेवरी, व यमकदार तेवरी की रचना कर अपनी काव्य प्रतिभा के दर्शन कराये हैं-

पजरी पंकज पाखुरी, पल-पल प्रकटे पीर
नर-नारी नन्दित नहीं, नयन-नयन नित नीर। चुभन-सी मन के भीतर।
जिये न हरि मधु प्रेममय सुखद हवा की ओर
हैरत! है रत आज भी मन सत्ता की ओर। श्याम का अजब सुशासन।

तेवरीकार रमेशराज का तेवरी शतक 'ऊधो कहियो जाय', अपने काव्यात्मक लालित्य, सामाजिक सरोकारों के कारण, हमें दुष्यंत कुमार जैसे कवि की याद दिलाता रहेगा। इस अनूठी काव्यकृति हेतु, तेवरीकार को साधुवाद, बधाई।

समीक्ष्य पुस्तक-
ऊधो कहियो जाय (तेवरी शतक)
कवि-रमेशराज
सार्थक सृजन प्रकाशन, १५/१०९, ईसानगर,
निकट थाना सासनीगेट, अलीगढ़-२०२००१

समीक्षक-योगेन्द शर्मा
सम्पर्क-३/२९सी लक्ष्मीबाई मार्ग, रामघाट रोड, अलीगढ़।
मोबाइल-०९८९७४१०३२०,०९७६०००२२७४

Scanned with CamScanner

तेवरी के तेवर को दर्शाती पत्रिका 'तेवरीपक्ष'

-भगवानदास जोपट

हिन्दी कविता के क्षेत्र में कविता की अनेक विधाओं के मध्य तेवरी विधा का केंद्रीय स्थान है। अनेक काव्यांदोलनों का साक्षी रहा हिंदी कविता का वांड्मय तेवरी आंदोलन का भी गवाक्ष रहा है, जहाँ समय की विडंबनाओं एवं विसंगतियों ने इसे धारदार एवं तेवरयुक्त काव्याभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। मेरी दृष्टि में 'तेवर' से 'तेवरी' शब्द का नामांकन हुआ है, जिन्हें हम कबीर की आधुनिक उलटबांसियाँ भी कह सकते हैं। अपने छंदानुशासन से, कहन से, मात्राओं की गणना से और तुकबंदी से ग़ज़ल और तेवरी दोनों अलग-अलग विधाएँ हैं और जो लोग तेवरी को हिंदी ग़ज़ल का एक रूप मानते हैं, उनकी समझ पर सिवाय तरस खाने के और क्या किया जा सकता है। एक प्रकार के विरोध -रस को स्थापित करने का यह 'तेवरी-पक्ष' का अनूठा प्रयास है, जो इस मायने में सार्थक है कि तेवरी विधा अब परिचय की मोहताज नहीं रही है तथा इसे व्यापक जनस्वीकार्यता भी मयस्सर हुई है। मेरे विचार में ग़ज़ल और तेवरी का विवाद बेकार की कवायद है। विगत छब्बीस सालों से 'तेवरीपक्ष' का अनवरत प्रकाशन इस बात का प्रमाण है कि हिंदी काव्य की सतरंगी विधाओं में तेवरी का भी अपना रंग है। श्रीयुत् रमेशराज, अलीगढ़ द्वारा संपादित प्रकाशित 'तेवरीपक्ष' (त्रैमासिक) का अक्टूबर-दिसम्बर-०९ अंक मेरे सामने है, जिससे गुजरते हुए हिंदी कविता के इस नूतन पक्ष के यमकदार तेवर एवं विरोधरस का आस्वाद मिलता है। यह धारदार, पैनी रचनाधार्मिता से ओतप्रोत लघु पत्रिका बिहारी के शब्दों में-'देखण में छोटी लगे पर घाव करे गंभीर' को चरितार्थ करती है। उदाहरण के रूप में आवरण पर रमेशराज की दो तेवरियों की पंक्तियों ध्यातव्य हैं। उन्होंने इन तेवरियों को 'यमकदार तेवरियां' शीर्षक दिया है। पहली तेवरी की पंक्तियां देखिए-

तन-चीर का उफ् यूँ हरण, कपड़े बचे बस नाम को,

हमला हुआ अब लाज पै, अबला जपै बस राम को।

कविता का काम मनोरंजन करना नहीं बल्कि गाफिल आदमी को झिंझोड़कर जगाना है। मध्यकाल में जो काम कबीर ने किया था, वही काम आज 'तेवरी कविता' कर रही है। समय के सच को दिखलाकर आदमी को बाखबर कर रही है। 'मंच' स्तंभ के अंतर्गत हिंदी ग़ज़ल के 'कथ्य का सत्य' संपादक रमेशराज का आलेख हिंदी ग़ज़ल की अद्यतन प्रवृत्तियों पर एवं उसके कथ्य पर बेवाक लेख है जो संभवतः संपादकीय आलेख भी है। उक्त लेख में विद्वान लेखक नें हिंदी ग़ज़ल के कुछ नामचीन रचनाकारों की ग़ज़लों के आलोक में हिंदी ग़ज़ल के प्रायः समूचे परिदृश्य का तटस्थ विश्लेषण किया है, जो ग़ज़ल सृजन पर एक परिपक्व विमर्श है। हिंदी ग़ज़ल का इतिहास, उसका सौंदर्य तत्व, उसके छंदगत व्याकरण-विन्यास एवं उसकी अधुनातन प्रवृत्तियों पर नीर-क्षीर दृष्टिपात किया गया है। इस लिहाज से यह आलेख ग़ज़ल के अध्येताओं एवं मुझ जैसे सामान्य किस्म के काव्य-मीमांसकों के लिए समान रूप से उपयोगी है। प्रेयसि की नाजुक अदाओं, उसके हुस्नोजमाल एवं विरहाग्नि के रीतिकालीन वर्णन से शुरू हुआ ग़ज़ल का सफर आज के आदमी की मुश्किलतर होती जाती जिंदगी एवं उसके दैनंदिन संघर्षों के

Scanned with CamScanner

कटु यथार्थ का जीवंत प्रस्तुति तक, बहस-मुबाहिसा है, जो इस लेख को पठनीय एवं संग्रहणीय बनाता है। कुछ प्रमुख हस्ताक्षरों की ग़ज़लों की पंक्तियों के बहाने यह सार्थक विमर्श किया है उनमें सर्व श्री डॉ. अनंतराम मिश्र 'अनंत', डॉ. महेश्वर तिवारी, उर्मिलेश, चांद शेरी, राम सनेही लाल 'यायावर', शिव ओम अंबर, डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, नित्यानंद 'तुषार', महेश अनघ, कुंवर बेचैन, पुरूषोत्तम 'यकीन', आलोक यादव', अशोक 'आलोक', 'प्रेम' किरण सागर मिर्जापुरी, श्याम अंकुर (सं. सौगात), डॉ. प्रभा दीक्षित, जनकवि श्रमिक, राजेंद्र तिवारी, प्रमुख गजलकार उल्लेखनीय हैं। जो कथ्य से साक्षात्कार, मर्म को स्पर्श करने वाली जीवंत बिंबात्मकता, सहजता-सरलता या तरलता आदि बिंदुओं को समाहित किये हुए है। यह आलेख ग़ज़ल-सृजन के नौसिखियों के लिए भी उपादेय है, साथ में ग़ज़ल के इन दिग्गजों के लिए भी जो, विरोधाभासों की ग़ज़लें लिखकर स्वयं को दुष्यंत की परंपरा का वाहक समझ बैठे हैं। इस खोजपरक आलोचना लेख के लिए संपादक साधुवाद के हकदार हैं। निश्चय ही यह लेख पढ़कर हिंदी ग़ज़ल के समकालीन कांतिधर्मा चरित्र की भ्रांत अवधारणा का पर्दाफाश होता है। पाठकीय स्तंभ में तेवरी और ग़ज़ल पक्ष पर चुनिंदा पत्र छपे हैं, जो पाठकों की जागरूकता का परिचायक हैं। कुछ पत्र प्रशंसा में है तो कुछ पत्र नैगेटिव सुर के भी हैं, जो निष्पक्ष संपादकीय नीति के द्योतक हैं। आलोचनात्मक पत्र प्रकाशन स्वस्थ पत्रकारिता का उदाहरण हैं, जो बहुत कम संपादकों में देखा जाता है। अधिकांश पत्र तेवरी-पक्ष की हिमायत में छपे हैं। इनमें 'विरोध रस' के स्वरूप पर और ग़ज़ल के स्वरूप पर पत्र उल्लेखनीय है। उक्त अंक में प्रकाशित तेवरियों में राजकुमार मिश्र की १२ तेवरियां दी गयी है, धारदार तीखे शब्दों की अभिव्यंजना और व्यंग्य का संपुट तेवरी को तीक्ष्ण तेवर प्रदान करता है। अतएव विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को बेनकाब करने में यह विधा जितनी कारगर है उतनी ग़ज़ल नहीं। इसके शिल्प-रस,छंद भाषा-शैली, कथन भंगिमाएं, अलंकार, प्रतीक,मुहावरे यहां तक कि वक्रोक्ति का तीखा दंश इसे ग़ज़ल से अलगाते है और मुकम्मिल तौर पर तेवरी को एक अलग काव्य विधा का दर्जा देते हैं। कुछ प्रकाशित तेवरियों के रचनाकार हैं- सर्वश्री हितेश कुमार शर्मा, डॉ. शारदा प्रसाद सुमन, अंकुर, फजलुर रहमान हाशमी, डॉ. अवधेश, डॉ. सर्वनानंद द्विवेदी, नरेश हिमलपुरकर आदि। हिंदी साहित्य में विरोध रस की खोज करके रमेशराज ने हमारे वाड्मय को समृद्ध किया है, वास्तव में विरोध का भी अपना रस होता है, भले ही उसकी प्रतीति का आस्वाद तल्खी से परिपूर्ण क्यूं न हो। इस तरह विरोध रस की सृष्टि और तेवरी पर गवेषणात्मक शोध करके रमेशराज ने स्तुत्य कार्य किया है। और अंत में दर्शन बेजार का तेवरी संग्रह'ये जंजीरें कब टूटेंगी' से १६ तेवरियां प्रकाशित कर संपादक ने इस तेवरी अंक को संग्रहणीय बना दिया है- पत्रिका का समापन रमेश प्रसून, खालिद हुसैन सिद्दीकी, डॉ. प्रद्युम्न भल्ला, संजीव वर्मा सलिल, सुरेंद्र दीप और डॉ. ब्रहमजीत गौतम की तेवरियों से हुआ हैं । इस प्रकार धारदार व्यंग्य तेवर से युक्त 'तेवरीपक्ष' के इस अंक का हिंदी जगत् में स्वागत होगा।

दर्शन बेज़ार के सद्यः प्रकाशित तेवरी संग्रह

ख़तरे को भी आहट सुन

की आगामी १६ पृष्ठों पर क्रमशःप्रस्तुति-

Scanned with CamScanner

४२

कत्ल की तफतीश गहराई से की जाने लगी
संस्कारों की सच्चाई सामने आने लगी।

कर दिए आजाद बच्चे जब से जो चाहें करें
तब से पश्चिम की हवा पूरब को झुलसाने लगी।

आप जब चाहें किसी अखबार को पढ़ लीजिए
खबर अब अपराध की ही सुर्खियाँ पाने लगी।

बैठ आँगन में रचे जाने लगे षड्यंत्र अब
हर बहन-माँ आज अपनों से ही भय खाने लगी।

चार दीवारी में रिश्ते खून से सजने लगे-
नींव पावन प्यार की घर-घर दरक जाने लगी।

चीर हरता द्रौपदी का देखकर चौपाल पर
बूढ़े बरगद पर उदासी अजब-सी छाने लगी।

किस रसातल की तरफ अब ये प्रगति ले जायेगी।
जिन्दगी 'बेजार' खुद ही मसियें गाने लगी।

Scanned with CamScanner

४३

बड़ी विषैली हवा बही पिछले पखवारे से
घर के बच्चे सहमे-सहमे हैं बंटवारे से॥

घर पर छाया देने वाला पीपल सुबक रहा
कोई हमें काट कर ले जाएगा आरे से॥

गाय रँभाती रहती है रह-रह आँगन बीच बँधी
कल खदेड़ देंगे सब मुझको घर के द्वारे से॥

जिस चबूतरे पर जमती थी पुरखों की बैठक
उसे तोड़ डाला जाएगा एक इशारे से॥

अब किश्तों में हुआ करेगी तुलसी की पूजा
सामूहिक स्वर खो जाएँगे जयजयकारे से॥

आँगन में 'बेज़ार' उठेंगी ऊँची दीवारें
वंचित होंगे भाई-भाई भाईचारे से॥

Scanned with CamScanner

४४

छोड़ ही दें आप हमको बस हमारे हाल पर
लाठियों भी झेल लेंगे बाजुओं के ढाल पर॥

शेख जुम्मन और अलगू चौधरी भयभीत हैं-
पंच परमेश्वर करें क्या फैसला चौपाल पर॥

पीर सुनने को हमारी है किसे फुर्सत यहाँ-
लोग अब चर्चा करें केवल सियासी चाल पर॥

सामने सरपंच के हम खूब रोये जार - जार
आँसुओं ने हार मानी एक मोटी खाल पर॥

है कहाँ महफूज माँ बेटी बहन कोई इधर
निकलिए घर से न बाहर लिख दिया दीवाल पर॥

था शिकारी ही वही छिपकर लगाए घात जो-
और हम पंछी से बैठे थे उसी के जाल पर।

हम किधर जाएँ न हमको सूझता अब क्या करें-
बाग में बैठा हुआ है बाज भी तो डाल पर॥

४५

झाँक कर दीवार से तो देखिए-
गाँव को घेरे खड़े हैं भेड़िए॥

खास कर बच्चों को समझा दें जरूर
आज नुक्कड़ की तरफ मत खेलिए॥

ठीक है पनघट बहुत ही पास है
बहन बेटी को मगर मत भेजिए॥

छुप गया डरकर भले सरपंच घर
साथ बढ़िए पर उसे आगे किए॥

वक्त है चलिए उठाए असलहे
देखकर खतरा नहीं चुप बैठिए॥

वक्त ये हमला न कर दे फिर कहीं
दूर तक इसको यहाँ से ठेलिए।

मानिए आ जाएँगे चौपाल तक
वोट मांगेंगे ये सत्ता के लिए॥

Scanned with CamScanner

४६

देश नानक बुद्ध गांधी के सँभल हो सावधान
ताक में घुसपैठ के कब से खड़ा है तालिबान॥

रट अहिंसा की लगाना छोड़ दे, हुँकार भर-
तीर तरकश में सजा ले हाथ में गहकर कमान॥

भर चुका है सब्र का प्याला सहे हमले बहुत
पार सरहद तक मिटा आतंक का नामो-निशान॥

था यहाँ बिखरा खज़ाना नाम भी था स्वर्ण-खग
देखने पैदल जिसे आया यहाँ था फाहियान॥

युग-युगों से तू रहा है जूझता अन्याय से-
कौन तुझको छल सकेगा बाँकुरे भारत महान॥

अब उठा गाण्डीव, नभ को दे गुँजाँ टंकार से
आज फिर कुरुक्षेत्र में है पार्थ तेरा इम्तहान॥

दी तुझे आवाज राणा आज फिर मेवाड़ ने
बैठ चेतक पर दुबारा थरथरा दे आसमान।

Scanned with CamScanner

४७

कौन सुनता है यहाँ फरियाद अब अच्छन मियाँ
आपने हाकिम को चाहे लाख भेजी चिट्ठियाँ।

अफसरों की चापलूसी में सभी मशगूल हैं
है किसे फुर्सत पढ़े जो आप सबकी अर्जियाँ।।

लूट हिंसा अपहरण उद्योग बन विकसित हुए
छल-कपट धोखाधड़ी अखबार की हैं सुर्खियाँ।।

एक अंधी दौड़ जिसका रास्ता तक तय नहीं
लोग चलते जा रहे हैं भ्रान्ति की ले तख्तियाँ।।

अस्थिपंजर देश का है हर जगह चटखा हुआ
आप हर हड्डी पे बाँधेंगे कहाँ तक पट्टियाँ।।

Scanned with CamScanner

४८

कल बना था जो यहाँ स्वागत में ऊँचा-सा मचान-
आपने देखे नहीं क्या खून के उस पर निशान॥

राष्ट्र के निर्माण के चर्चे किए जिसने बहुत
रात घिरते ही अचानक विष उगलती वह जुबान॥

साथ-मिलकर जो लड़े दो सौ बरस अंग्रेज से
वो लगे लड़ने परस्पर खींचकर कसकर कमान॥

घर बँटे, मिट्टी बँटी, टुकड़े वतन के हो गए-
हिन्द पर भारी पड़ी है अब सियासी खींचतान॥

ढाका नहीं अपना रहा लाहौर बेगाना हुआ
मुल्क की तस्वीर का चेहरा है अति लोहू-लुहान॥

सरफिरे फिर हाथ में बारूद लेकर फिर रहे
कौन जाने किस जगह ये थरथरा दें आसमान।

एक पल भी लग न जाए आँख को झपकी कहीं
असहलों से पट गई है राजनीतिक हर दुकान।

Scanned with CamScanner

४९

आज घर-घर में कई हथियार हैं
लाइसेन्सी एक, कट्टे चार हैं॥

भूल बैठे लोग जिम्मेदारियाँ
याद सबको रह गए अधिकार हैं॥

वक्त का चेहरा बहुत सहमा हुआ
मुल्क के अच्छे नहीं आसार हैं॥

नाम लेकर प्रान्त भाषा धर्म का
ढूँढते सब रार का आधार हैं॥

परस्पर दो हाथ करने के लिए
आस्तीनें खींच हम तैयार हैं।

वैद्य किस-किस की दवा-दारू करे
हर किसी घर में बसे बीमार हैं॥

रूठने का कुछ हमारे है सबब
हम न केवल नाम के 'बेज़ार' हैं॥

Scanned with CamScanner

५०

खूने दिल अपना जलाकर जिसमें भड़काई है आग
आँधियों के सामने मैं रख रहा हूँ वो चिराग।।

मेरे हिस्से की जो रोटी थी यहाँ, वह है कहाँ-
कौन उसको ले गया है, चाहिए मुझको सुराग।।

मुझ पे हँस-हँस के किए हैं वार अपनों ने बहुत
आज तक भी सूख पाये हैं न उन जख्मों के दाग।।

भूख ने कुछ इस तरह से घर किया है मेरा घर
पेट पर बाँधे हैं पत्थर रोज रातें जाग-जाग।

जब नहीं देखे गए बच्चे बिलखते सुबकते
इस व्यवस्था के मुक़ाबिल ध्वंस के छेड़े हैं राग।।

Scanned with CamScanner

५१

आपने सुकरात बनकर क्या किया-
आख़िरी दम तक महज़ विष ही पिया।

इस व्यवस्था ने उसे कुचलना सदा
जुल्म से जिसने यहाँ लोहा लिया।।

हर घड़ी जो बाँटता अमृत रहा
भाग्य में उसके रहा बस संखिया।

सल्तनत का कुछ नहीं बदला चलन
सत्य को किसने यहाँ जीने दिया।

घाट उसको ही उतारा मौत के
गैर के हित जो यहाँ जीवन जिया।

सभ्यता की रूह यूँ भयभीत है
लोग अब तक गा रहे हैं मर्सिया।।

Scanned with CamScanner

५२

शब्दों में अंगार लिए हम-
वाणी में हुंकार लिए हम।

मजलूमों का हक़ जतलाने
सिर पर जुनूँ सवार लिए हम॥

भाट नहीं हैं हम सत्ता के
कवि हैं क्रान्ति विचार लिए हम॥

शोषित स्याही कलम कटारी
भाषा पैनी धार लिए हम।

भीतर तक है आग हमारे
विप्लव का भंडार लिए हम।

सड़कों से संसद तक छाए
धूमिल के संस्कार लिए हम॥

कहने को उपनाम साथ में
अब अपने 'बेज़ार' लिए हम॥

Scanned with CamScanner

५३

आप सत्ता के विदूषक, आप रहने दीजिए
हम खरी - खोटी कहेंगे, बात कहने दीजिए।

चापलूसी एक हद तक ही लगा करती भली
कुछ हमारे व्यंग्य उनको आज सहने दीजिए॥

क्यारियों में बाँटिए मत महँकता घर का चलन
जुल्म-छल-अन्याय की दीवार ढहने दीजिए॥

आग कुछ ऐसी लगाओ आज उसमें हर तरफ
व्याप्त हे जो भीरुता इस बार दहने दीजिए॥

और कितने दिन सहे जनता सियासत की घुटन
मन्द शीतल वायु कुछ श्रीमान बहने दीजिए॥

Scanned with CamScanner

५४

कोई खंजर सँभाल आया है-
कोई लेकर के ढाल आया है।

शीशमहलो जरा सँभल जाओ
पत्थरों में उछाल आया है॥

भूख उतरी है अब बगावत पर
रोटियों का सवाल आया है

सूखी झीलों में लहर देखेगा
कंकड़ी कोई डाल आया है॥

एक मुद्दत से जम गया था जो
उस लहू में उबाल आया है॥

Scanned with CamScanner

५७

एक सभा गांधी चौराहे पर कल होने वाली है
वही मंच पर बैठ सकेंगे, जिनके हाथ दुनाली है॥

बस कुछ ही दिन बाद, इलेक्शन होने हैं दिल्ली वाले,
इस चिन्ता ने एक खलबली सबके ही कर डाली है॥

नेता आएँगे टटोलने नब्ज नगर के लोगों की-
किस खेमें में कितना बल है कितना कौन मवाली है॥

कई सभासद भीड़ जुटाकर यूँ ताकत दिखलाएँगे
देखो हमने प्रिय जनता में कैसी साख बना ली है॥

छुटभय्यों में होड़ लगेगी, मेरा फोटो खिंच जाए
मेरा चेहरा दिखे सभी को, यह बीमारी वाली है॥

जनता किन्तु समझती है सब, समय पड़े उत्तर देगी
ऊपर से वह भले दिखाई देती भोली-भाली है॥

नेताओं की कौन सुने 'बेज़ार' यहाँ महँगाई में
बिन रोटी के, बिन सब्जी के हर गरीब की थाली है॥

Scanned with CamScanner

५८

खरी-खरी सुनकर जनता की भृकुटि न तानो नेताजी
तुम सारा अनुदान डकारे, भले न मानो नेताजी॥

भूमि माफियाओं से मिलकर पाट दिए तालाब सभी
तड़प-तड़प कर मरीं मछलियाँ, तुम क्या जानो नेताजी॥

बाग-बगीचे खूब बनाए, फ्लैट चार मंज़िल वाले
हमसे अपनी जनसेवा का यश न बखानो नेताजी॥

सूफी बन तुम अलख जगाओ दिन भर सादा जीवन का
शाम ढले नित मधुशाला में गहरी छानो नेताजी॥

धन के पीछे रहे दौड़ते जीवनभर तुम पगलाए
अब तो कुछ निष्काम कर्म की मन में ठानो नेताजी॥

नई पीढ़ियाँ माँगेंगी कल हर हिसाब आना-पाई
नब्ज़ ज़रा 'बेज़ार' समय की भी पहचानो नेताजी॥

Scanned with CamScanner

'घड़ा पाप का भर रहा' विलक्षण तेवर-शतक

विश्व प्रताप भारती

श्री रमेशराज छंदबद्ध कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। 'तेवरी लेखन' एवं 'विचार को लेकर रस की निष्पत्ति पर वैचारिक विवेचन' में उनकी एक अलग पहचान है। रमेशराज ने ग़ज़ल विधा में नये-नये तेवरों को ग़ज़ल न कहकर तेवरी बताकर हिन्दी साहित्य में विधागत विमर्श को आगे बढ़ाया है। तेवरी विधा को पहचान और स्थापन दिलाने के लिए तेवरीपक्ष का संपादन-प्रकाशन किया, जिससे वे लगातार जूझते रहे। हिन्दी की प्रगतिशील-जनवादी कविता में जिला अलीगढ़ से बहुत नाम आते हैं, उनमें रमेशराज शीर्षस्थ हैं। ये कहना गलत न होगा कि आलोचकों ने उनकी पुस्तकें तो पढ़ी लेकिन उनका नाम लेने से, उनकी चर्चा करने से कतराते रहे। चूंकि तेवरी पर आलोचक चुप्पी साधे रहे। कुछ आलोचकों ने तो तेवरी लिखने वालों को तेवरबाज तक कह डाला।

रमेशजी अपनी लम्बी तेवरी पुस्तक- 'घड़ा पाप का भरा' (तेवरी शतक) के माध्यम से एक बार फिर चर्चा में है। उनकी तेवरियों को पढ़कर हर एक व्यक्ति ये महसूस कर सकता है, 'अरे ये तो हमारे मन की बात कह दी।' शायद लेखक के लिखने की यही सफलता है।

सामान्यत: कविता दूसरों को कुछ बताने के लिए लिखी जाती है जो मानवीयता के पक्ष की मुखर आवाज बनती है। मानवीयता के स्तर पर कविता में जो भाव आते हैं, वे अद्भुत होते हैं। रमेशजी की कविता (तेवरी) में ये भाव एक बड़ी सीमा तक विद्यमान हैं-

'' 'तेरे भीतर आग है- लड़ने के संकेत
बन्धु किसी पापी के सम्मुख, तीखेपन की मौत न हो।'
जन-जन की पीड़ा हरे, जो दे धवल प्रकाश
जो लाता सबको खुशहाली, उस चिन्तन की मौत न हो।''

वस्तुत: आज आम आदमी की जिन्दगी इतनी बेबस और उदास हो गयी है कि वह समय के साथ से, जीवन के साथ से छूटता जा रहा है। संवेदना शून्य समाज की स्थिति कवि को सर्वाधिक पीड़ित करती है-

''कायर ने कुछ सोचकर ली है भूल सुधार
डर पर पड़ते भारी अब इस संशोधन की मौत न हो।''

समाज में जो परिवर्तन या घटनाएँ हो रही हैं, वे किसी एक विषय पर केन्द्रित नहीं हैं। घटनाओं के आकार बदले हैं, प्रकार बदले हैं। इन घटनाओं के माध्यम से नयी संस्कृति जन्म ले रही है तो कहीं लूट, हत्या, चोरी, बलात्कार, घोटाला, नेताओं का भृष्टाचार, सरकारी कर्मचारियों की रिश्वतखोरी, कानूनी दाँवपेंच का दुरूपयोग जैसी घटनाएँ सामने आ रही है-

"लोकपाल का अस्त्र ले, जो उतरा मैदान
करो दुआएँ यारो ऐसे रघुनन्दन की मौत न हो।
नया जाँच आयोग भी जाँच करेगा खाक
ये भी क्या देगा गारण्टी 'कालेधन की मौत न हो'।"

कविता में भोगे हुए यथार्थ की लगातार चर्चा हुई है, लेकिन उसके चित्रण तक। दलित लेखकों ने इस सीमा को तोड़ा है। दलित लेखकों ने अपने लेखन में जहाँ समस्याओं को दिखाया है तो वहीं उनका समाधान भी बताया है। रमेशजी दलित नहीं हैं। उनका जन्म विपन्न परिवार में हुआ, इसलिए दलितों के प्रति व्यक्तिगत तौर पर उनकी पीड़ा घनीभूत है।

निःसंदेह आज दलितों ने निरन्तर प्रयास के बावजूद अपना जीवन-स्तर बदला है। अपने लिए अनंत संभावनाओं का आकाश तैयार कर लिया है परन्तु समाज में अभी भी कुछ ऐसा है जिससे लेखक आहत है-

पूँजीपति के हित यहाँ साध रही सरकार
निर्बल दलित भूख से पीड़ित अति निर्धन की मौत न हो।
लिया उसे पत्नी बना, जिसका पिता दबंग
सारी बस्ती आशंकित है अब हरिजन की मौत न हो।"

कवि ने आजादी की लड़ाई के माध्यम से राजनीति के दोगलेपन पर तीखा प्रहार किया है-

झाँसी की रानी लिए जब निकली तलवार
कुछ पिट्ठू तब सोच रहे थे 'प्रभु लंदन की मौत न हो'।

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र के उपन्यास गोदान के युवा पात्र 'गोबर' के माध्यम से कवि ने करारी चोट की है। ऐसे गोबर आज हर जगह मिल जायेंगे जो समाज और देश के विकास के लिए चिन्तित हैं-

'झिंगुरी', दातादीन' को जो अब रहा पछाड़
'होरी' के गुस्सैल बेटे 'गोबरधन' की मौत न हो।

हिन्दी साहित्य में नये-नये प्रयोग होते रहे हैं आगे भी होते रहेंगे। कविता में 'तेवरी प्रयोग' साहित्य के लिए एक सुखद अनुभव है जो सामाजिक सन्दर्भों से गुजरते हुए समसामयिक युगबोध तक ले जाता है। तेवरी अपना काम बखूबी कर रही है। तेवरीकार के शब्दों में-

"इस कारण ही तेवरी लिखने बैठे आज
किसी आँख से बहें न आँसू, किसी सपन की मौत न हो।"

स्पष्ट है, तेवरी नयी सोच, नयी रोशनी लेकर आई है। प्रस्तुत तेवरी शतक में सभी रचनाएँ आँखें खोलने वाली हैं। विलक्षण और अद्‌भुत। आशा है लेखक तेवरी विधा को स्वतंत्र विधा के रूप में अपनायेंगे, और बढ़ायेंगे।

-विश्वप्रताप भारती
बरला अलीगढ़
(उ.प्र.)

बुलंदप्रभा में आलोकित 'रमेशराज'

डॉ. अभिनेष शर्मा

'बुलन्दप्रभा' का जुलाई-सितम्बर-१५ अंक तेवरीकार रमेशराज जी के साहित्य सृजन को अंक में समेटकर शोभायमान है। अपनी बात को स्पष्ट रूप से रखकर तेवरीकार साहित्याकाश में अपना स्थान और देदीप्यमान कर लेते हैं। कविता को हर कवि अपने ही अंदाज में सजाता है-संवारता है और उसे गुनगुनाने का मौका देता है। तभी तो कविता अलग-अलग रसों में डूब कर इठलाती है और गद्य के ऊपर तरजीह पाती है। कभी कविता यथार्थ की वैतरणी पार करती है और कभी विद्रोह की आग सुलगाती है। कभी करुण पुकार को करुण शब्दों ढाल कर करुण रस को बिखेरती है तो कभी सौन्दर्य के जलजले से साक्षात्कार कराती है। तेवरी में अलग ही रस के दर्शन होते हैं और वह है 'विरोधरस'। हर तेवरीकार इस विरोधरस को हर दृष्टिकोण से शब्दांकित करने का अथक प्रयास करता है तथा तेवरीकार रमेशराज जी इस प्रयास में शत प्रतिशत खरे उतरते हैं उनका हर तेवरी संग्रह एक संग्रहणीय रचना है। अलीगढ़ को तेवरी के लिए पहचान दिलाने का धन्यवाद तथा धन्यवाद बुलन्दप्रभा का, उनके साहित्य पर आधारित अंक निकालने के लिए। इस अंक में रमेशराज जी ने खुल कर कविता तथा तेवरी दोनों के बारे में विस्तृत जानकारी दी है और तेवरी के पक्ष में सारे पक्षों को उजागर करते हुए विरोध रस को उचित स्थान दिलाने का प्रयास किया है। आमजन की स्थिति आज जिस बौखलाहट की विस्फोटक अवस्था में है, उसे शब्दों का पहनावा तेवरी के रूप में मिलता है। तेवरी के अलावा उनके अन्य साहित्यिक पहलुओं को इस अंक में पूरे सम्मान के साथ स्थान मिला है, चाहे व्यंग्य हों या फिर कहानी, बालगीत हों या फिर ग़ज़ल। हर विधा पर उनका पूरा आधिपत्य है।

रमेशराजजी जुड़े हुए व्यक्तित्वों ने भी उनके अंदर के व्यक्ति से मुलाकात कराने में कोई कोताही नहीं बरती है। जिसने उनसे जितना पाया है सूद समेत ही लौटाया है। हर विषय को गहराई तक जाकर उसकी पूरी जानकारी और जानकारी को शब्दों में ढालना यही एक प्रभावशाली व्यक्तित्व की पहचान है और रमेशराज जी इस कसौटी पर खरे उतरते हैं। विरोधरस के सभी भाव और अनुभाव इस अंक में विस्तृत रूप से चित्रित किये गए हैं। तेवरी और इसमें बहने वाले विरोध और आक्रोश को इससे अनजान व्यक्ति भी इस तरह महसूस करता है मानो वह खुद एक तेवरीकार हो। भले ही हर व्यक्ति कहता हो कि क्रोध अंधा होता है। मगर उसी अंधे क्रोध को विरोधरस दो आँखें, दो कान, एक नाक और एक कार्यशील मुंह देने का साहस करता है। एक तेवरीकार द्वारा हर शब्द को आक्रोश के साथ विरोध रस में डुबाकर ऐसे प्रस्तुत किया जाता है कि लगता है रचनाकार ही नहीं खुद रचना ही बोल रही है। जब सहनशीलता जवाब दे देती है तब आक्रोश का स्फुटन होता है। उर-अंतर की घुटन को आवाज मिलती है। तब जिस रचना का प्रादुर्भाव होता है उसे ही तेवरी के रूप में जाना जाता है रमेशराज जी का साहित्य-आँगन इस तरह के कई पुष्पो से सजा सुवासित आलय है, जिसे बुलन्दप्रभा ने और बुलंदियों तक पहुँचाने का पूरा प्रयास किया है।

--देव हॉस्पीटल, खिरनीगेट, अलीगढ़।

तेवरी आन्दोलन के प्रवर्तक रमेशराज को २०१५ का 'साहित्यश्री सम्मान'

अलीगढ़। २५ दिसम्बर। स्व. डॉ. राकेशगुप्त द्वारा अपनी पत्नी श्रीमती तारावली गुप्त की स्मृति में स्थापित 'साहित्य श्री' सम्मान इस वर्ष तेवरी आन्दोलन के प्रवर्तक श्री रमेशराज को दिया गया। इसके निर्णायक मण्डल में प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र (दिल्ली), वरिष्ठ आलोचक डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ तथा डॉ. प्रेम कुमार हैं। स्व. डॉ. राकेशगुप्त के पुत्र अभयकुमार गुप्त निर्णायक मंडल के संयोजक हैं। समारोह की अध्यक्षता डॉ. प्रेमकुमार ने की और विशिष्ट अतिथि का स्थान अ.मु.वि. के दर्शन शास्त्र विभाग में एसोशिएट प्रोफेसर डॉ. प्रीति सईद ने ग्रहण किया। अभयकुमार गुप्त, डॉ. जयश्री गुप्त तथा डॉ. अंजना बंसल ने माल्यार्पण, शाल अर्पण, सम्मान राशि और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। सन् २००९ में स्थापित यह पुरस्कार अब तक डॉ. ऋषिकुमार चतुर्वेदी, डॉ. गोपालबाबू शर्मा, डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, डॉ. नरेन्द्र तिवारी, श्री अशोक 'अंजुम' 'श्री रघुवीर सिंह' 'अरविन्द', डॉ. अशोक शर्मा, डॉ. प्रेम कुमार, श्री सुरेश कुमार तथा श्री सुरेन्द्र सुकुमार को उनके महत्वपूर्ण साहित्यिक अवदान के लिए प्रदान किया जा चुका है। इस अवसर पर रमेशराज ने अपनी कुछ ओजस्वी रचनाओं का पाठ किया। डॉ भगतसिंह ने रमेशराज के रचना कार्य पर आलेख का पाठ किया और डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ ने उनकी रचनाशीलता का परिचय दिया। डॉ. जयश्री गुप्त ने अपने माता-पिता का भाव भीना स्मरण किया और डॉ. अंजना बंसल ने उनसे प्रेरित होने की चर्चा की। रमेशराज की कविताओं पर बोलते हुए डॉ. अरुणकुमार सिंह ने उन्हें जुझारू लेखक की संज्ञा दी। योगेन्द्र शर्मा ने उनके रचना संघर्ष के संस्मरण सुनाए। क्षेत्रपाल शर्मा ने जहां सारस्वत सम्मान परम्परा को सराहा, वहीं अशोक अंजुम ने रमेशराज के सार्थक लेखन और रमेशराज द्वारा स्थापित 'विरोधरस' को महत्वपूर्ण माना। डॉ मुरारीलाल शर्मा ने उनकी छन्द प्रवीणता पर प्रकाश डाला, वहीं डॉ. राजीव कुमार ने रमेशराज की दमदार रचनाओं का उल्लेख किया। प्रो. अशोक द्विवेदी ने उनकी कविताओं में व्यवस्था विरोध की ऊर्जा को रेखांकित किया। अशोक सक्सैना और डॉ. सुबोध मिश्र ने कवि को हार्दिक बधाई दी। सुरेन्द्र शर्मा का विचार था कि व्यवस्था विरोध की आवाज रमेशराज को उनको उनके पिता श्री रामचरन गुप्त से विरासत में मिली है। डॉ. प्रीति सईद ने श्री राज को प्रतिबद्ध रचनाकार माना। डॉ. प्रेम कुमार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उनकी कविताओं को तेजस्वी, विद्रोही और मूल्यों के लिए समर्पित सिद्ध किया। इस समारोह में डॉ. आर.के अग्रवाल, डॉ. ओ.पी.बंसल, जगत भूषण मिश्र, मरियम, कपिला गुप्त आदि सक्रिय सहयोग दिया।

Scanned with CamScanner

-'साहित्यश्री सम्मान-२०१५ के अवसर पर डॉ.भगतसिंह के लिखित उद्‌गार

किसी परिचय के मोहताज नहीं रमेशराज

तेवरीकार रमेशराज जी का नाम हम सबके मध्य किसी परिचय का मुहताज नहीं हैं, फिर भी 'साहित्यश्री' पुरस्कार परम्परा के अनुसार मैं इनका सूक्ष्म परिचय आप सबके सम्मुख रख रहा हूँ-

श्री रमेशराज जी का पूरा नाम रमेशचन्द्र गुप्त है। इनका जन्म १५ मार्च १९५४ को अलीगढ़ मथुरा मार्ग पर स्थित एसी गांव में एक वैश्य परिवार में लोककवि श्री रामचरन गुप्त जी के घर हुआ। हिन्दी और भूगोल दो विषयों में स्नातकोत्तर श्री रमेशचन्द्र गुप्त साहित्य जगत में रमेशराज के नाम से पहचाने जाते हैं। इनके प्रकाशित कवि-कार्य को निम्नांकित शीर्षक के मध्य बांटा जा सकता है-(१) सम्पादित कृतियाँ (२) स्वरचित कृतियाँ

सम्पादित कृतियों में-'अभी जुबां कटी नहीं', 'कबीर ज़िन्दा है', 'इतिहास घायल है', 'एक प्रहार: लगातार' जैसे तेवरी-संग्रह हैं। रस-रचित कृतियों में-'तेवरी में रससमस्या और समाधान', 'विचार और रस', 'विरोधरस' 'काव्य की आत्मा और आत्मीयकरण' हैं। इनमें कवि की रस और भाव से सम्बन्धित गूढ़ एवं गहन चिन्तनशीलता से साक्षात्कार होता है। ये उनकी आलोचनात्मक कृतियाँ भी हैं। श्री राज की प्रमुख्य ख्याति उनके कविकर्म के रूप में है, जिनमें तेवर शतक में 'दे लंका में आग', 'जै कन्हैया लाल की', 'घड़ा पाप का भर रहा', 'मन में घाव नये न ये', 'धन का मद गदगद करे', 'ककड़ी के चोरों को फाँसी', 'मेरा हाल सोडियन-सा है', 'रावण कुल के लोग', 'अन्तर आह अनंत अति' और 'पूछ न कबिरा जग का हाल' नामक कृतियाँ आती हैं। इन कृतियों में कवि की लम्बी तेवरियों के दर्शन होते हैं। शतक शीर्षक के अन्तर्गत-'ऊधौ कहियो जाय', 'मधु-सा ला', 'जो गोपी मधुवन गयीं', 'देअर इज एन आलपिन', 'नदिया पार हिंडोलना' और 'पुजता अब छल' जैसी कृतियों को समाहित किया गया है। मुक्त छंद कविता संग्रह के रूप में कवि का 'दीदी तुम नदी हो' और 'वह यानि मोहन स्वरूप' शीर्षक से प्रकाशित कृतियाँ हैं। इसके अलावा 'राष्ट्रीय बाल कविताएँ' नामक बालगीत संगह भी है। राष्ट्रीय मंचों के साथ कवि ने अपनी रचनाओं का विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों से समय-समय पर काव्य पाठ किया है। कवि रमेशराज को उ.प्र. गौरव, तेवरी-तापस शिखर-श्री,'परिवर्तन तेवरी रत्न' जैसी उपाधियों से भी सम्मानित किया जा चुका है। राष्ट्रीय एकीकरण परिषद उ.प्र. शासन की अलीगढ़ इकाई के पूर्वअध्यक्ष एवं सार्थक सृजन (साहित्य-संस्था), संजीवन सेवा संस्थान (सामाजिक सेवा संस्था) और उजाला शिक्षा एवं सेवा समिति जैसी सामाजिक संस्थाओं के आज भी अध्यक्ष हैं। दैनिक जागरण समाचार पत्र में स्वतंत्र पत्रकार के रूप में सम्बद्ध रमेशराज 'तेवरीपक्ष' त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका का वर्षों से सम्पादन-

Scanned with CamScanner

प्रकाशन कर रहे हैं।

रमेशराज जी की रचनाशीलता बहुआयामी है। आलोचक, निबन्धकार, गीतकार, ग़ज़लकार और तेवरी-विधा के संस्थापक सूत्रधार के रूप में इनकी विशिष्ट पहचान है। तेवरी के इस सारस्वत साधक के लिए डॉ. मधुर नज्मी ने बड़ी सार्थक टिप्पणी की है- ''हिन्दी नवगीत, हिन्दी गजल की स्थापना के लिए साहित्य में जो श्रम और मेहनत श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, डॉ. शम्भूनाथ सिंह और दुष्यन्त कुमार ने की है, उसी अन्दाज में रमेशराज ने 'तेवरी विधा' के लिए 'श्रेष्ठ' कार्य किया है और कर रहे हैं।''

रमेशराज का कवि अपने आस-पास की राजनैतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक विकृतियों और विसंगतियों को लेकर बहुत क्षुब्ध होता है। वह अपनी तेजतर्रार तेवरियां से वर्तमान व्यवस्था में बदलाव लाना चाहते हैं-

जितने वे शालीन साथियो!

उतने ही संगीन सुनो! अब तो नया विकल्प चुनो।।

छल प्रपंच के बल सारे खल

कुर्सी पर आसीन सुनो! अब तो नया विकल्प चुनो।।

कवि इस सिस्टम को बदलना भी चाहता है और दुखियारों के आँसू भी पौंछना चाहता है-

''इस सिस्टम से लड़ना हमको

अब जुल्मी पर बार करें, चलो दुखों के गाल छरें।

इस निजाम की आज पीठ पर

चाबुक जैसी मार करें, चलो दुखों के गाल छरें।'

कवि जानता है व्यवस्था परिवर्तन आसान नहीं है, इसके लिए लड़ाई लंबी चलनी है और इसके लिए वह तैयार भी है। रमेशराज की रचनादृष्टि तीखापन, रोष, क्रोध या सामाजिक विकृतियों, विसंगतियों को ही नहीं दर्शाती बल्कि मन की कोमल अनुभूतियों को भी लिए हुए है-

नैन प्यारे ये तुम्हारे चाँद-तारे-से प्रिये!

इस लड़कपन, बंक चितवन में इशारे से प्रिये!

प्यास देते, आस देते, खास देते रस-सुधा

Scanned with CamScanner

है अधर पर मुर्ख सागर के नजारे-से प्रिये

इनकी रचनाएं विक्रोक्ति और ध्वन्यात्मकता को प्रकट करने के साथ-साथ छान्दस अनुपालन के लिए भी पहचानी जाती हैं। इन्होंने गीत ग़ज़ल ही नहीं, दोहा, हाइकु, मुक्तक, चतुष्पदी, कुण्डलिया घनाक्षरी आदि छन्दों में अथवा दो-दो, तीन-तीन छन्दों को जोड़-जोड़कर, तोड़-तोड़कर लघु भी और लम्बी भी तेवरियां प्रस्तुत करने के अनूठे और नवोन्मेषी प्रयोग किये हैं। 'जनक छन्द' जैसे नये छन्दों में लिखा और स्वयं भी छन्द के क्षेत्र में इन्होंने 'नव कुण्डलिया राज छंद', 'सर्पकुंडली राज छंद' जैसे अभिनव प्रयोग किये हैं।

प्रयोगधर्मी कवि, कहानीकार, निबन्धकार, समालोचक, समीक्षक, सम्पादक, प्रकाशक सबको जोड़कर रखने की सांगठनिकता से पूर्ण, बाल और नव रचनाकारों को कविता की बारीकियों को सहजता से समझाकर उनमें रचनाशीलता के अंकुरों को सींचकर फलदार वृक्ष बनाने की अद्‌भुत क्षमता से पूर्ण, 'विरोधरस' को रसविधान के अनुसार हिन्दी साहित्य के सम्मुख रखने वाले इस कवि का रचनाकार्य पर्याप्त मूल्यांकन की सार्थक अपेक्षा रखता है। अलीगढ़ जनपद में जन्मे इस नवोन्मेषी रचनाकार रमेशराज को 'साहित्य-श्री सम्मान वर्ष २०१५' मिलने पर हार्दिक बधाई।

-डॉ. भगतसिंह, सचिव-सार्थक संवाद, १९/१४६ गांधी नगर, अलीगढ़

मुक्तक विन्यास में तेवरी

जुम्मन की बाखर खतरे में
रामू का भी घर खतरे में।
वो आग लगाने में माहिर
'होरी' का छप्पर खतरे में॥

सद्‌भावों के स्वर खतरे में
सब श्वेत कबूतर खतरे में।
हर बाज़ आज है मस्त-मस्त
चिड़ियाओं के पर खतरे में॥

हम जितने बाहर खतरे में
उतने ही भीतर खतरे में।
बटुए को साफ किया उसने
गुल्लक की चिल्लर खतरे में॥

रमेशराज
मो.9634551630

सरकार पंजीकरण संख्या-51714/87

शोधार्थियों के लिये एक महत्वपूर्ण पुस्तक

विचार और रस

(रस-निष्पत्ति का वैचारिक विवेचन

लेखक-रमेशराज

राष्ट्रीय बाल कविताएँ

कवि-**रमेशराज**

प्राप्ति स्थल-बजरंग प्रकाशन, सागरपुर, दिल्ली

महत्वपूर्ण तेवरी संग्रह

(1) अभी जुबां कटी नहीं — संपादक- रमेशराज

(2) कबीर ज़िन्दा है — संपादक- रमेशराज

(3) इतिहास घायल है — संपादक- रमेशराज

(4) एक प्रहार: लगातार — तेवरीकार-दर्शन बेजा

(5) देश खण्डित हो न जाए — तेवरीकार- दर्शन बेजार

सार्थक-सृजन, १५-१०९, ईसानगर, निकट-थाना सासनीगेट, अलीगढ

ये जंजीरें कब टूटेंगीं

शीघ्र प्रकाश्य तेवरी-संग्रह (तेवरीकार-दर्शन बेजार)

सार्थक-सृजन, १५-१०९, ईसानगर, निकट-थाना सासनीगेट, अलीगढ

बुक पोस्ट/डाक पंजीयन संख्या-ए.एल.जी. /67/08/2010

प्रतिष्ठार्थ-

संपादक/ प्रकाशक/ मुद्रक रमेशराज द्वारा सार्थक-सृजन प्रकाशन , 15-109, ईसानगर, निकट-थाना सासनीगेट, अलीगढ़ के लिये शरदा प्रटिंग प्रैस हेतु गुप्ता प्रिंटिग प्रैस, अचल तालाब, अलीगढ़ से मुद्रित। **मोबाइल- ९६३५५१६३०**

Scanned with CamScanner